हिंदी-6

अध्याय-1. वीरों की पूजा

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (क) 2. (ख) 3. (क) 4. (ख)

लिखित प्रश्न

1. (क) प्रातः **(ख)** फूल **(ग)** तुम **(घ)** काशी

2. (क) पथिक कवि के प्रश्न का उत्तर देते हुए कहता है कि मुझे गंगासागर, रामेश्वर, काशी नहीं जाना है। मुझे तो सिर्फ तीर्थराज चित्तौड़ देखने जाना है तथा वहीं पर मेरा दीपक जलेगा और फूलों की माला तथा फूल चढ़ेंगे। **(ख)** पथिक चित्तौड़ इसलिए जाना चाहता है कि वह उस स्थान की पूजा कर सके तथा वहाँ दीपक तथा माला चढ़ा सकें जहाँ की वीरता के बहुत से किस्से प्रसिद्ध हैं। जहाँ के लोग अपनी स्वतंत्रता तथा आन के लिए अपने प्राणों का बलिदान करने से भी पीछे नहीं हटते। **(ग)** ''जहाँ आन पर माँ-बहनों की जला-जला पावन होली'' पंक्ति में कवि ने पावन होली अपने प्राणों का बलिदान करने को कहा है। अपनी माँ तथा बहनों की आन की रक्षा के लिए वहाँ के लोग अपने प्राणों की आहुति भी दे देते हैं।

3. (क) तीर्थराज चित्तौड़ को देखने के लिए पथिक की आँखें प्यासी हैं क्योंकि चित्तौड़ को स्वतंत्रता संग्राम की भूमि होने के कारण तीर्थों का राजा तथा परम पवित्र माना गया है। पथिक के मन में उसके दर्शन करने की तीव्र इच्छा है।

(ख) कवि अचल स्वतंत्र दुर्ग चित्तौड़ को मानता है। वह बहुत मजबूत है। जब उस पर मुगल सैनिकों ने आक्रमण किया तो उनकी ललकार सुनकर वीर राजपूत सैनिकों के दल हाथों में तलवारें लेकर उनसे युद्ध करने के लिए निकल पड़े थे। अपनी इज्जत पर संकट देखकर वहाँ की नारियों ने जौहर व्रत किया था अर्थात वे जीते-जी चिता में जलकर मर गईं थी। चित्तौड़ दुर्ग अभेदय रहा है। अतः कवि उसे स्वतंत्र दुर्ग मानता है।

4. भावार्थ—प्रस्तुत पद्यांश में कवि कहता है कि जब कोई शत्रु चित्तौड़ पर आक्रमण करता है तो वहाँ के नौजवानों की टोलियाँ उसका सामना करने के लिए हाथों में तलवारें लेकर निकल पड़ते हैं। माँ व बहनों की आन की रक्षा के लिए वहाँ के लोग अपने प्राणों की आहुति दे देते हैं और गर्व से जय-जय माँ के नारे लगाते हैं।

भाषा और व्याकरण

1. (क)	माला-फूल	माला और फूल	द्वंद्व समास
(ख)	तीर्थराज	तीर्थों का राजा (बनारस)	तत्पुरुष समास
(ग)	माँ-बहनों	माँ और बहनों	द्वंद्व समास
(घ)	वीर मंडली	वीरों की मंडली	तत्पुरुष समास
(ङ)	जौहर व्रत	जौहर के लिए व्रत	तत्पुरुष समास

2. (क)	पीतांबर	पीत + अंबर	दीर्घ संधि
(ख)	पावन	पौ + अन	अयादि संधि
(ग)	संन्यासी	सम + न्यासी	व्यंजन संधि
(घ)	रामेश्वर	राम + ईश्वर	गुण संधि
(ङ)	विद्यालय	विद्या + आलय	दीर्घ स्वर संधि

3. (क) पुष्पित **(ख)** फलित **(ग)** पल्लवित **(घ)** लिखित **(ङ)** रचित **(च)** सीमित

4. (क) सुबह **(ख)** अपना **(ग)** इधर **(घ)** अचल **(ङ)** पावन **(च)** हित

अध्याय-2. हृदय परिवर्तन

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (क) 2. (ग) 3. (ग) 4. (ख)

लिखित प्रश्न

1. (क) कोशल **(ख)** चलना **(ग)** आदमी **(घ)** दृष्टि

2. (क) श्रावस्ती कोशल की राजधानी थी। **(ख)** अंगुलिमाल के अत्याचार से प्रसेनजित की प्रजा त्राहि-त्राहि कर रही थी। **(ग)** डाकू जब किसी का वध करता, तो उसकी अंगुली काट लेता और एक माला में पिरो लेता। इस प्रकार उसके पास अंगुलियों की एक माला-सी बनती जा रही थी, जिसे वह हर समय अपने गले में डाले रहता। इसी कारण उसका नाम अंगुलिमाल पड़ गया था। **(घ)** महात्मा बुद्ध की बातें सुनकर अंगुलिमाल की आँखें खुल गईं। उसके मन का अंधकार दूर हो गया। उसने अंगुलियों की माला तोड़ डाली और कटार दूर फेंक दी। अंगुलिमाल ने हिंसा का जीवन सदा के लिए छोड़ दिया और वह भगवान बुद्ध का शिष्य बन गया।

3. (क) राजा प्रसेनजित की चिंता का कारण डाकू अंगुलिमाल था जिसके कारण उसकी प्रजा त्राहि-त्राहि कर रही थी। **(ख)** मैं तो ठहर गया, तू कब ठहरेगा? इस कथन से महात्मा बुद्ध अंगुलिमाल से कहना चाहते थे कि वे तो ज्ञान प्राप्त करके जीवन-मरण के बंधन से छूट गए, पर वह मार-काट कब बंद करेगा। **(ग)** महात्मा बुद्ध की बात सुनकर अंगुलिमाल चकित हो उठा क्योंकि उसके सामने आने वालों की हमेशा भय से घिग्घी बँध जाया करती थी। आज तक उसे कभी कोई ऐसा आदमी नहीं मिला था जिसने उससे आँख से आँख मिलाकर बात की हो। यह कौन है, जो डरना तो दूर रहा, शांतिपूर्वक मुस्करा रहा है? **(घ)** अंगुलिमाल भयंकर डाकू था उसके अत्याचार से प्रसेनजित की प्रजा त्राहि-त्राहि कर रही थी। उसने हजार आदमियों को मारने की प्रतिज्ञा कर रखी थी। परन्तु वह कितने आदमियों को मार चुका, इसका हिसाब रखना कठिन था। इसके लिए उसने एक युक्ति निकाली। वह जब किसी का वध करता, तो उसकी अंगुली काट लेता। इस प्रकार उसके पास अंगुलियों की एक माला-सी बनती जा रही थी। जिसे वह हर समय गले में डाले रहता। इसी कारण उसका नाम अंगुलिमाल पड़ गया था।

4. **(क)** महात्मा बुद्ध ने अंगुलिमाल को शांति, दया और प्रेम का उपदेश दिया। उस उपदेश से उसकी आँखें खुल गई। उसके मन का अंधकार दूर हो गया। उसने अंगुलियों की माला तोड़ डाली और कटार दूर फेंक दी। उसने हिंसा का जीवन सदा के लिए छोड़ दिया और वह भगवान बुद्ध का शिष्य बन गया।

भाषा और व्याकरण

1. **(क)** चिंतित **(ख)** भयानक **(ग)** पहरेदार **(घ)** ध्यानमग्न **(ङ)** निरस्त्र
2. तुरंत ही घनी झाड़ियों को चीरती हुई एक विकराल मूर्ति आ खड़ी हुई। ऊँचा कद, काला शरीर, भयानक चेहरा, लाल आँखे, बिखरे बाल, बड़ी-बड़ी मूँछें, लंबी मज़बूत भुजाएँ, चौड़ा सीना, हाथ में कटार।
3. **(क) पीड़ा से चिल्लाना** — बाढ़ के कारण जनता त्राहि-त्राहि कर रही थी।

   (ख) डर जाना — शेर को सामने देखते ही राहुल की घिग्घी बँध गई।

   (ग) सचेत हो जाना — अमित की कपटपूर्ण बातें सुनकर सुरेश की आँखें खुल गईं।

   (घ) अत्यधिक प्रभाव डालना — रिद्म पर उसके पिता की बातों का जादू का-सा असर हुआ और वह कठिन परिश्रम करने लगा।

   (ङ) सामना करना — मुँह छुपाने से कुछ नहीं होगा। आँख से आँख मिलाकर मुसीबत का सामना करना चाहिए।
4. **(क)** नृप **(ख)** युक्ति **(ग)** वन **(घ)** पीड़ा **(ङ)** नर **(च)** शाश्वत
5. **(क)** भूत **(ख)** गुरु **(ग)** कम **(घ)** रंक **(ङ)** सरल **(च)** पराया **(छ)** रोए **(ज)** सुखी **(झ)** अज्ञान
6. **(क)** नृप, भूपति, महीपति **(ख)** मनुष्य, मानव, नर **(ग)** वृक्ष, तरु, पादप **(घ)** तन, बदन, काया **(ङ)** नेत्र, चक्षु, अक्षि

अध्याय-3. मेरा धर्म, मेरा ईश्वर

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (क) 2. (ख) 3. (ग) 4. (क)

लिखित प्रश्न

1. **(क)** सच **(ख)** धर्म **(ग)** व्यापक **(घ)** शक्ति
2. **(क)** नहीं, पृथ्वी पर कभी भी एक धर्म नहीं हो सकता। **(ख)** दूसरे धर्मों के आदरपूर्वक अध्ययन से हिंदू धर्मों के प्रति उनकी श्रद्धा कम नहीं हुई बल्कि इससे उनकी जीवन दृष्टि व्यापक बन गई है। **(ग)** धर्मों के भ्रातृमंडल का उद्देश्य यह होना चाहिए कि वह एक हिंदू को बहुत अच्छा हिंदू, मुसलमान को बहुत अच्छा मुसलमान और एक ईसाई को बहुत अच्छा ईसाई बनाने में सहायता करे। **(घ)** केवल इंद्रियों द्वारा दिखाई देने वाली कोई भी चीज स्थायी नहीं हो सकती।

3. **(क)** जब तक अलग-अलग धर्म मौजूद हैं, तब तक प्रत्येक धर्म को किसी विशेष बाह्य चिह्न की आवश्यकता हो सकती है। लेकिन जब बाह्य चिह्न केवल आडंबर बन जाते हैं अथवा अपने धर्म को दूसरे धर्मों से अलग बताने के काम आते हैं, तब वे त्याज्य हो जाते हैं। **(ख)** दूसरों के लिए हमारी यह प्रार्थना नहीं होनी चाहिए— ईश्वर, तू उन्हें वही प्रकाश दे, जो तूने मुझे दिया है, बल्कि यह होनी चाहिए उन्हें वह सारा प्रकाश दे, जिसकी उन्हें अपने सर्वोच्च विकास के लिए आवश्यकता है। **(ग)** ईश्वर के अस्तित्व का पता इस प्रकार चलता है कि कोई अदृश्य शक्ति है जो हमारे चारों ओर की प्रत्येक चीज को बदलती है, जो सबको धारण करती है, जो सृजन करती है, संहार करती है और नया सृजन करती है। यह जीवनदायी शक्ति या सत्ता ही ईश्वर है। **(घ)** पृथ्वी पर जितने मनुष्य हैं, उतने ही धर्म हैं क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति की विचारधारा भिन्न है। विचारधारा भिन्न होने के कारण कभी भी पृथ्वी पर एक धर्म नहीं हो सकता। हाँ, इतना हो सकता है कि हम एक-दूसरे धर्मों के ग्रन्थों को पढ़ें, धर्मों के प्रति समभाव रखें। विविध धर्म एक ही जगह पहुँचने वाले अलग-अलग रास्ते हैं। अपने धर्म पर जो हमारा प्रेम है, उसकी अंधता को मिटाकर हम एक-दूसरे धर्म के संपर्क में तो आ सकते हैं। लेकिन एक धर्म का होना असंभव है। यदि हम अपनी विचारधारा को उच्च रखें तो हमारा धर्म है—मानव धर्म। संसार में सभी मानव ही तो हैं। यदि यही सोच व्यापक रूप धारण करती है तो पृथ्वी पर एक धर्म की संभावना की जा सकती है अन्यथा नहीं।

भाषा और व्याकरण

1. **(क)** धार्मिक **(ख)** त्याज्य **(ग)** जीवनदायी **(घ)** रहस्यमयी **(ङ)** कल्याणकारी **(च)** सर्वोच्च
2. **(क)** अधिक-परिमाणवाचक विशेषण **(ख)** गहरी-गुणवाचक विशेषण **(ग)** सही-गुणवाचक विशेषण।
3. **(क)** मरण **(ख)** असत्य **(ग)** अंधकार **(घ)** अमंगल **(ङ)** अस्थिर **(च)** अस्थायी **(छ)** संहार **(ज)** अभिन्न **(झ)** दृश्य **(ञ)** ग्राह्य **(ट)** गलत **(ठ)** अपवित्र

अध्याय-4. त्याग

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (ख) 2. (क) 3. (घ) 4. (क)

लिखित प्रश्न

1. **(क)** परिवार **(ख)** पानी **(ग)** मोटी **(घ)** रखवाला
2. **(क)** लिंकन ने सोचा कि सैनिक तो देश का रखवाला होता है। जब यह देश के लिए अपने प्राणों तक का बलिदान कर सकता है तो क्या वह एक छोटा-सा त्याग भी नहीं कर सकता? यह सोचकर उन्होंने मुस्कराते हुए वह मछली उस सैनिक को थमा दी। **(ख)** सैनिक के मछली माँगने पर लिंकन थोड़ी देर के लिए सोच में इसलिए पड़ गए क्योंकि एक ओर कई दिन से भूखे उनके छोटे-छोटे भाई-बहन थे तथा दूसरी ओर देश

पर जान न्योछावर करने वाला वीर सैनिक। **(ग)** अपने घर में घुसते हुए लिंकन डर रहे थे क्योंकि उन्हें पता था कि उनके छोटे भाई-बहन भूखे थे और उन्हें खाली हाथ देखकर वे उदास हो जाएँगे। **(घ)** इस कहानी से हमें शिक्षा मिलती है कि जिस प्रकार सैनिक अपने देश के लिए बड़े से बड़ा बलिदान करने में तनिक भी संकोच नहीं करते, उसी प्रकार आवश्यकता पड़ने पर हम भी उनके लिए त्याग कर सकते हैं।

3. **(क)** वे ईश्वर से प्रार्थना कर रहे थे कि उनके काँटे में कई मछलियाँ फँस जाएँ, जिससे सब घर वालों को भरपेट भोजन मिल सके। **(ख)** लिंकन की माँ ने उसे खाली हाथ देखकर उससे पूछा, ''क्या तुम्हें एक भी मछली नहीं मिली?'' **(ग)** भाई-बहनों में सबसे बड़ा होने के कारण उन्हें लगता था कि परिवार के भरण-पोषण में उन्हें भी हाथ बँटाना चाहिए, लेकिन किस तरह, यह तय नहीं कर पा रहे थे। वे इस सोच में डूबे बैठे थे। कि परिवार के लोगों की भूख मिटाने का कोई उपाय हो।

भाषा और व्याकरण

1. **(क)** रक्षक **(ख)** सैनिक **(ग)** देशभक्त **(घ)** मनचाहा **(ङ)** संकोची
2. **(ख)** रूखा और सूखा **(ग)** भरण और पोषण **(घ)** भाई और बहन
3. **(क) अत्यधिक प्रसन्नता होना** — अपने प्रथम आने पर नीरजा की खुशी का ठिकाना नहीं रहा। **(ख) बढ़ना** — अशोक के समय में बौद्ध धर्म भली प्रकार फला-फूला। **(ग) साथ देना** — निधि हमेशा अपनी माँ के काम में हाथ बँटाती है। **(घ) तनिक भी अच्छा न लगना** — असत्यवादी लोग मुझे फूटी आँख नहीं सुहाते। **(ङ) ईर्ष्या करना** — कंचन की शादी बड़े घराने में होने पर उसकी सहेली दिव्या की छाती पर साँप लोट गया।
4. **(क)** माता **(ख)** बुढ़ापा **(ग)** रात **(घ)** अनेक **(ङ)** बड़े **(च)** आग **(छ)** कायर **(ज)** धीरे **(झ)** नीचा।
5. **(क)** भाई **(ख)** औरतों **(ग)** बेटी **(घ)** पूरा **(ङ)** भूखी **(च)** बोली
6. **(क)** भवन, सदन, निकेत **(ख)** दिवस, दिवा, वासर **(ग)** सरिता, तटिनी, आपगा **(घ)** जल, नीर, वारि **(ङ)** प्रभु, परमात्मा, जगदीश

अध्याय-5. उठो धरा के अमर सपूतो

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (क) 2. (ख) 3. (ग) 4. (क)

लिखित प्रश्न

1. **(क)** निर्माण **(ख)** ज्योति **(ग)** भरो **(घ)** नए
2. **(क)** इस कविता में कवि ने देश के नवयुवकों का आह्वान किया है। **(ख)** गुणी पुत्र को सपूत कहते हैं। **(ग)** कवि जग-उद्यान को नूतन मंगलमय ध्वनियों से गुंजित करना चाहता है। **(घ)** कवि ज्ञान के दीपक जलाने की बात कहता है।
3. **(क)** नए निर्माण से कवि का तात्पर्य है कि देश में चारों ओर विकास हो तथा नई उमंग तथा उत्साह का वातावरण बने जिससे सभी को अपना कार्य पूरा करने में सफलता प्राप्त हो।

(ख) कवि जन-जन के जीवन में फिर से नई स्फूर्ति तथा नए प्राण भरने के लिए कह रहा है। **(ग)** कवि ज्ञान के सौ-सौ दीपक जलाकर नवयुग का आह्वान करने के लिए कह रहा है।

4. **भावार्थ**—प्रस्तुत पंक्तियों में कवि देश के नवयुवकों से कहता है कि वे देश का नव निर्माण करने का बीड़ा उठाएँ। उनके लिए नया सवेरा है तथा सभी बातें नई हैं। उनके मन में नई उमंगें तथा नई तरंगें हैं, तथा देश का विकास करने की नई आशाएँ हैं। कवि उनसे कहता है कि कई युगों से मुरझाए हुए सुमनों में नई-नई मुस्कान भरो अर्थात् जो निराशा का माहौल बना हुआ है उसमें नई आशाएँ भरो।

भाषा और व्याकरण

1. **(क)** प्रातः **(ख)** किरण **(ग)** आशा **(घ)** श्वास **(ङ)** भ्रमर **(च)** माता **(छ)** नूतन **(ज)** धरा **(झ)** सुपुत्र **(ञ)** पावन
2. स्वयं कीजिए।
3. **(क)** पृथ्वी, धरती, वसुंधरा, भूमि; **(ख)** प्रकाश, प्रभा, चमक, उजाला; **(ग)** पंछी, पक्षी, खग, अंडज; **(घ)** कुसुम, पुष्प, सुमन, प्रसून; **(ङ)** संसार, विश्व, जगत्, दुनिया
4. **(क)** कल्याणमय, **(ख)** ज्ञानमय, **(ग)** गतिमय, **(घ)** प्राणमय, **(ङ)** प्रकाशमय।
5. **(क)** पुरातन **(ख)** आकाश **(ग)** बैठो **(घ)** पुराना **(ङ)** कुम्हलाना **(च)** काँटा **(छ)** कल **(ज)** अपावन **(झ)** भक्षक
6. **(क)** अमर **(ख)** सुनहरी **(ग)** मंगलमय **(घ)** पुजारी **(ङ)** प्रकाशक

अध्याय-6. जूलिया

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (ग) 2. (ख) 3. (घ) 4. (ग)

लिखित प्रश्न

1. **(क)** जूलिया को बच्चों की देखभाल के लिए रखा गया था। **(ख)** गृहस्वामी ने जूतों के लिए पाँच रूबल काट लिए। **(ग)** जूलिया ने मकान मालकिन से तीन रूबल लिए थे। **(घ)** इस संसार में दब्बू और रीढ़ रहित लोगों के लिए कोई स्थान नहीं है।
2. **(क)** गृहस्वामी ने जूलिया के वेतन से नौ रूबल रविवार के, तीन रूबल तीन छुट्टियों के, सात रूबल बीमारी के, दो रूबल प्याली के, दस रूबल कोल्या की जैकेट के, पाँच रूबल वान्या के जूतों के, दस रूबल एडवांस के तथा तीन रूबल मालकिन के पैसे काटने की बात कही। **(ख)** जूलिया ने गृहस्वामी को उसे पैसे देने के लिए धन्यवाद दिया। **(ग)** गृहस्वामी ने जूलिया को समझाया कि अन्याय का हमेशा विरोध करना चाहिए क्योंकि अपना अस्तित्व बचाने के लिए हमें इस कठोर, क्रूर, निर्मम और हृदयहीन संसार से लड़ना होगा। इस संसार में दब्बू और रीढ़ रहित लोगों के लिए कोई स्थान नहीं है।

भाषा और व्याकरण

1. **(क)** निर्मम **(ख)** हृदयहीन **(ग)** दब्बू **(घ)** रीढ़ रहित **(ङ)** कीमती
2. **(क)** साप्ताहिक **(ख)** दैनिक **(ग)** वैतनिक **(घ)** वार्षिक **(ङ)** व्यापारिक **(च)** व्यावसायिक
3. **(क)** विधानवाचक **(ख)** प्रश्नवाचक **(ग)** विस्मयवाचक **(घ)** निषेधवाचक

अध्याय-7. गुरु नानक

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (ख) 2. (ग) 3. (क) 4. (ख)

लिखित प्रश्न

1. **(क)** खूब **(ख)** बाहर **(ग)** आगे **(घ)** दिन
2. **(क)** लड़कपन से ही गुरु नानक सांसारिक विषयों के प्रति उदासीनता और अपना समय आध्यात्मिक चिंतन तथा सत्संग में व्यतीत करते थे। इन सभी बातों से पता चलता है कि गुरु नानक में बचपन से ही वैराग्य की भावना थी। **(ख)** मरदाना को उपहारों के साथ देखकर गुरु नानक इसीलिए उदास हो गए क्योंकि उन्होंने उसे केवल भोजन करने के लिए भेजा था उपहारों के लिए नहीं। **(ग)** जब लहना ने गुरु नानक से कहा कि उसके छोटे होने के कारण संसार की बुराइयों की आग सबसे पहले उसे पकड़ेगी इसलिए वह इतनी छोटी आयु में उनकी शरण में आया है। यह सुनकर गुरु नानक उससे बहुत प्रभावित हुए। **(घ)** गुरु नानक ने लहना को बताया कि रास्ते में तुम्हें ऐसे बहुत-से लोग मिलेंगे, जिन्हें इन चीजों की हमसे अधिक आवश्यकता होगी। ये सब चीजें उनमें बाँट देना।
3. **(क)** गाँव वालों ने मरदाना की आवभगत, जी भरकर मनपसंद भोजन खिलाकर, तरह-तरह के उपहार देकर, खाने-पीने का सामान, ऊनी और रेशमी कपड़े तथा अन्य वस्तुएँ देकर की। **(ख)** गुरु नानक ने मरदाना को समझाते हुए कहा—''मरदाना, जिस तरह दान देने वाले को अपनी मेहनत से कमाए गए धन से ही दान देना चाहिए, उसी प्रकार दान लेने वाले को भी उतना ही दान लेना चाहिए, जितने की उसे आवश्यकता हो।'' **(ग)** लड़का यह सोचकर गुरु नानक के पास आने लगा कि अभी तो वह भी एक छोटी लकड़ी की तरह ही है। संसार की बुराइयों की आग सबसे पहले उसे ही पकड़ेगी, इसलिए वह गुरु नानक की शरण में आ गया। **(घ)** गुरु नानक लोगों को उपदेश देते कि—''ईश्वर एक है। उसी ने हम सबको बनाया है। हिंदू-मुसलमान सब एक ईश्वर की संतान हैं। उसके लिए सब बराबर हैं। आपस में प्रेम से रहो। अच्छे-अच्छे काम करो, जिससे ईश्वर के दरबार में लज्जित न होना पड़े।'' **(ङ)** लड़के ने गुरु नानक को बताया कि कुछ दिन पहले मेरी माँ ने मुझे चूल्हा जलाने को कहा। मैंने चूल्हे में लकड़ियाँ रखीं और आग लगा दी। मैंने देखा कि छोटी लकड़ियाँ पहले आग पकड़ने लगी, यह देखकर मैं सोचने लगा कि मैं भी तो एक छोटी लकड़ी की तरह ही हूँ। संसार की बुराइयों की आग सबसे पहले मुझे ही पकड़ेगी, इसलिए मैं अभी से आपकी शरण में आ गया हूँ।''

4. **(क)** गुरु नानक ने लोगों से **(ख)** मरदाना ने गुरु नानक से **(ग)** गुरु नानक ने मरदाना से **(घ)** लहना ने गुरु नानक से।

भाषा और व्याकरण

1. **(क)** प्रसिद्ध **(ख)** प्रगति **(ग)** प्रधान **(घ)** प्रपौत्र **(ङ)** प्रक्रिया **(च)** प्रबल **(छ)** प्रदेश **(ज)** प्रभाव **(झ)** प्रचलन (ड़) प्रयत्न
2. **(क)** वात + आवरण — स्वर संधि **(ख)** सत् + संग — व्यंजन संधि **(ग)** उत्तर + अधिकारी — स्वर संधि **(घ)** अति + अधिक — यण संधि
3. पुल्लिंग — लड़कपन, शिष्य, भोजन, गुरु, चूल्हा, लड़का, संसार
   स्त्रीलिंग — संतान, गठरी, चीजें, चिंता, खुशी, माँ, आग
4. **(क)** मृत्यु **(ख)** कुसंग **(ग)** असमान **(घ)** बुरा **(ङ)** अनादर **(च)** अपना**(छ)** अज्ञात **(ज)** अप्रसन्न **(झ)** बाहर
5. **(क)** मनपसंद — मरदाना ने जी भरकर मनपसंद खाना खाया।
   (ख) गठरी — अब यह गठरी बाँधकर कन्धे पर रख लो।
   (ग) लोभ — तुमने अधिक लोभ क्यों किया?
   (घ) उपहार — गाँव वालों ने ये चीजें उपहार में दी हैं।
   (ङ) लज्जित — गुरु नानक की बात सुनकर मरदाना बहुत लज्जित हुआ।
6. **(क)** मधुरता **(ख)** उदासी **(ग)** प्रसन्नता **(घ)** लोभी **(ङ)** दानी **(च)** गरीबी

अध्याय-8. हार की जीत

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (ख) 2. (घ) 3. (क) 4. (घ)

लिखित प्रश्न

1. **(क)** घोड़े **(ख)** असह्य **(ग)** सुनकर **(घ)** दोपहर
2. **(क)** बाबा भारती एक गाँव के बाहर छोटे-से मंदिर में रहते थे। **(ख)** खड़ग सिंह के नाम से लोग इसलिए डरते थे क्योंकि वह उस इलाके का प्रसिद्ध डाकू था। **(ग)** घोड़े को देखकर खड़ग सिंह को आश्चर्य हुआ। उसने हज़ारों घोड़े देखे थे, परंतु ऐसा बाँका घोड़ा उसकी आँखों से कभी गुज़रा न था। वह सोचने लगा, ऐसा घोड़ा खड़ग सिंह के पास होना चाहिए था। इस साधु को ऐसी चीज़ों से क्या मतलब? **(घ)** घोड़ा छिन जाने के बाद बाबा भारती ने खड़ग सिंह से प्रार्थना की कि, ''इस घटना को किसी के सामने प्रकट न करना।''
3. **(क)** माँ को अपने बेटे, साहूकार को अपने देनदार और किसान को अपने लहलहाते खेत देखकर जो आनंद प्राप्त होता है, वही आनंद बाबा भारती को अपना घोड़ा देखकर मिलता था। **(ख)** बाबा भारती को अपना घोड़ा इतना प्यारा इसलिए था क्योंकि वह घोड़ा बड़ा सुंदर और बड़ा बलवान था। उसके जोड़ का घोड़ा सारे इलाके में न था।

(ग) बाबा भारती ने खड़ग सिंह से प्रार्थना इसलिए की क्योंकि यदि लोगों को इस घटना का पता चल जाता तो वे किसी गरीब पर विश्वास नहीं करते।

भाषा और व्याकरण

1. **(क)** मोहित होना — अविनाश की सुंदरता तथा व्यक्तित्व देखकर पूरा विद्यालय उस पर लट्टू था। **(ख)** जलना — रिमांशु की तरक्की देखकर उसके पड़ोसियों के हृदय पर साँप लोटने लगे। **(ग)** अत्यधिक प्रसन्न होना — भारतीय क्रिकेट टीम में चुने जाने पर भुवनेश्वर कुमार फूला न समाया। **(घ)** आश्चर्यचकित हो जाना — अचानक शेर को सामने देखकर अजय का मुँह खुला का खुला रह गया। **(ङ)** सोचना — मयंक ने बहुत सिर मारा लेकिन प्रश्न का उत्तर नहीं मिला।
2. **(क)** पराया **(ख)** अंदर **(ग)** असह्य **(घ)** प्रातः **(ङ)** अप्रसन्न **(च)** अनुपस्थित **(छ)** नापसंद **(ज)** सत्य **(झ)** दूर

अध्याय-9. कोशिश करने वालों की हार नहीं होती

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (क) 2. (ख) 3. (ग) 4. (ग)

लिखित प्रश्न

1. **(क)** हार **(ख)** सौ **(ग)** कमी **(घ)** दूना
2. **(क)** जो हमेशा प्रयास करते हैं उनकी हार नहीं होती। **(ख)** 'आखिर उसकी मेहनत बेकार नहीं होती', कवि ने यह नन्हीं चींटी के लिए कहा है। **(ग)** गोताखोर पानी में डुबकी लगाकर मोती ढूँढ़ता है। **(घ)** 'मुट्ठी उसकी खाली हर बार नहीं होती,' कवि ने यह बात गोताखोर के लिए कही है।
3. **(क)** दीवार पर चींटी दाना लेकर चलती है तो वह कई बार गिरती है तथा उठकर वह फिर से चल देती है क्योंकि उसके मन में विश्वास होता है कि वह यह कर सकती है और आखिर में वह सफल हो जाती है। **(ख)** बार-बार खाली हाथ लौटने के बाद भी गोताखोर हार इसलिए नहीं मानता क्योंकि उसे पता होता है कि मोती आसानी से नहीं मिलते, उसके लिए बार-बार प्रयास करना पड़ता है और अंततः उसे सफलता मिल जाती है। **(ग)** असफलता को चुनौती मानने से आपको अपनी कमजोरी का पता चल जाएगा और आप अपनी उस कमजोरी को दूर करके पुनः सफलता प्राप्त कर लेंगे। **(घ)** इस कविता से कवि हमें यह संदेश देता है कि सफलता उसी व्यक्ति को प्राप्त होती है जो लगातार प्रयास करता रहता है तथा असफलता से घबराता नहीं।
4. **भावार्थ**—प्रस्तुत पंक्तियों में कवि कहता है कि हमें असफलता को एक चुनौती की तरह स्वीकार करना चाहिए। हमें यह देखना चाहिए कि हमारे प्रयास में क्या कमी रह गई तथा उसे कैसे दूर करना चाहिए। जब तक तुम सफल नहीं होते तब तक तुम्हें अपनी नींद तथा चैन को त्याग देना चाहिए। तुम्हें संघर्षों से घबराकर मैदान नहीं छोड़ना चाहिए क्योंकि बिना कुछ किए किसी की जयकार नहीं की जाती। उसके लिए लगातार प्रयास करने पड़ते हैं। क्योंकि कोशिश करने वाले कभी भी हार नहीं मानते।

भाषा और व्याकरण

1. **(ख)** सूदखोर **(ग)** आदमखोर **(घ)** रिश्वतखोर **(ङ)** चुगलखोर **(च)** मुफ़्तखोर **(छ)** हरामखोर **(झ)** घूसखोर
2. **(क)** जीत **(ख)** अविश्वास **(ग)** मूल्यवान **(घ)** निरुत्साह **(ङ)** असफल **(च)** बेचैन
3. **(क)** नौका, मोती, गोताखोर **(ख)** कोशिश, विश्वास, हैरानी, असफलता
4. स्वयं कीजिए।

अध्याय-10. बहादुर धोबी

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (ग) 2. (घ) 3. (ख) 4. (क)

लिखित प्रश्न

1. **(क)** वर्षा **(ख)** घर **(ग)** तीर **(घ)** चीता
2. **(क)** रामदास धोबी का काम करता था। **(ख)** बुढ़िया टपके से डरती थी। **(ग)** रामदास जब अपने गाँव पहुँचा तो लोगों ने उसे चीते पर सवार देखा तो उन्होंने दाँतों तले अंगुली दबा ली। रामदास ने उन्हें अपनी ओर अजीब दृष्टि से देखते देखा, तो वह सोचने लगा कि वे उसे इस तरह क्यों देख रहे हैं तभी उसका ध्यान नीचे की ओर गया। तब उसे पता चला कि वह गधे पर नहीं बल्कि चीते पर सवार है। **(घ)** रामदास ने गाँव वालों के सामने डींग मारी कि—''अभी आपने मेरी बहादुरी देखी ही कहाँ है? समय आने दो तब दिखाऊँगां चीते की सवारी आपके लिए बड़ी बात होगी, मेरे लिए तो मामूली बात हैं।''
3. **(क)** जब गधा नहीं लौटा तो रामदास ने उसे आस-पास खोजा, लेकिन वह नहीं मिला। रामदास ने सोचा कि शायद कहीं जंगल में न निकल गया हो। वह अपने गधे की खोज में जंगल की ओर चल दिया। **(ख)** चीता बुढ़िया की बातें सुनकर इसलिए डर गया क्योंकि बुढ़िया शेर या चीते से नहीं डरती, पर टपके से डरती है। उसे लगा कि टपका कोई बहुत बड़ी बला है। **(ग)** जब रामदास को पता चला कि वह चीते पर सवार है, तो उसके होश उड़ गए। डर के कारण उसकी जान निकली जा रही थी। किसी को सहायता के लिए पुकार भी नहीं सकता था। वह मन ही मन भगवान से अपनी जान बचाने की प्रार्थना करने लगा।**(घ)** जब लोगों ने रामदास को चीते पर सवार देखा तो उन्होंने दाँतों तले अँगुली दबा ली। रामदास ने उन्हें अपनी ओर अजीब दृष्टि से देखते देखा तो वह सोचने लगा कि वे उसे इस तरह क्यों देख रहे हैं। तभी उसका ध्यान नीचे की ओर गया। जब उसने देखा कि वह गधे पर नहीं, बल्कि चीते पर सवार हैं, तो उसके होश उड़ गए।

भाषा और व्याकरण

1. स्वयं कीजिए।
2. **(क)** हिंसक **(ख)** मुँहअँधेरे **(ग)** निर्दयी **(घ)** निराश

3. **(क)** आश्चर्यचकित हो जाना—छोटी-सी लड़की को रस्सी पर करतब दिखाते हुए देखकर लोगों ने दाँतों तले अंगुली दबा ली। **(ख)** डर जाना—पुलिस को आते हुए देखकर चोरों के होश उड़ गए। **(ग)** बहुत तेजी से भागना—हाथी को देखते ही अमन तीर की तरह भाग गया। **(घ)** बहुत अधिक गर्मी पड़ना—जून मास की दोपहर में हम घर से बाहर निकलकर देखें तो अँगारे बरसते हुए नजर आते हैं।

अध्याय-11. बदले की आग

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (ग) 2. (ख) 3. (ख) 4. (क)

लिखित प्रश्न

1. **(क)** इधर **(ख)** खेत **(ग)** ओर **(घ)** टोह
2. **(क)** गाँव वालों ने झींगुर को समझाया कि, ''तुमने बड़ा अनर्थ किया। बुद्धू को जानते नहीं, कितना झगड़ालू आदमी है। अभी कुछ नहीं बिगड़ा, जाकर उसे मना लो।'' **(ख)** झींगुर ने निश्चय कर लिया कि बुद्धू की दशा भी अपने जैसी ही बनाऊँगा। उसके कारण मेरा सर्वनाश हो गया और वह चैन की वंशी बजा रहा है। मैं भी उसका सर्वनाश करूँगा। **(ग)** बुद्धू से बदला लेने में झींगुर की मदद हरिहर ने की। **(घ)** अंत में झींगुर मजदूरी करने लगा।
3. **(क)** झींगुर नहीं चाहता था कि बुद्धू अपनी भेड़ उसके खेत में से लेकर जाए क्योंकि उसके खेत में मटर लगी हुई थी और भेड़ों के पैरों के नीचे उसका खेत कुचल जाता। **(ख)** आग किसने लगाई, यह खुला भेद था, पर किसी को कहने का साहस नहीं था क्योंकि बुद्धू बहुत झगड़ालु व्यक्ति था। **(ग)** झींगुर ने बुद्धू से बदला लेने के लिए अपनी बछिया उसकी भेड़ों के साथ बाँध दी तथा हरिहर ने बछिया को जहर देकर मार दिया। बछिया की हत्या का दोष बुद्धू के सिर लगा और उसे बहुत बड़ा प्रायश्चित करना पड़ा। **(घ)** इस कहानी से हमें यह शिक्षा मिलती है कि हमें कभी भी किसी का बुरा नहीं करना चाहिए क्योंकि जब हम किसी का बुरा करते हैं तो हमारा भी बुरा हो जाता है।

भाषा और व्याकरण

1. झींगुर बोला, ''हाय ! मेरी बछिया ! चलो, ज़रा देखूँ तो, मैंने पगहिया नहीं लगाई थी। तुमने यह पगहिया कब लगा दी?'' बुद्धू ने कहा, ''भगवान जाने, जो मैंने उसकी पगहिया देखी भी हो। मैं तो तब से भेड़ों के पास गया ही नहीं।'' झींगुर—''जाते न तो पगहिया कौन लगा देता? गए होगे, याद न आती होगी।'' एक ब्राह्मण—''मरी तो तुम्हारी भेड़ों में न? दुनिया तो यही कहेगी कि बुद्धू की असावधानी से उसकी मृत्यु हुई, पगहिया किसी ने लगाई हो।''
2. **(क)** सरल वाक्य **(ख)** निषेधात्मक वाक्य **(ग)** विस्मयबोधक वाक्य **(घ)** प्रश्नवाचक वाक्य

3. **(क)** बाढ़ के कारण सारे काम-धंधे चौपट हो गए। **(ख)** नेता बनते ही अमित धरती पर पैर नहीं रखता। **(ग)** बुढ़ापे में राजन के माता-पिता चैन की वंशी बजा रहे थे। **(घ)** रिद्म ने अपने व्यापार में बहुत मेहनत की जिसके कारण आज उसके घर कंचन बरस रहा है।

अध्याय-12. आप भले तो जग भला

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (ख) 2. (ग) 3. (ख) 4. (ख)

लिखित प्रश्न

1. **(क)** खुश **(ख)** गुस्से से **(ग)** तिनका **(घ)** अवगुणों **(ङ)** परेशान
2. **(क)** पृथ्वी सिंह ने हिंसा का मार्ग त्यागकर अपने को बापू के सामने अर्पण कर दिया। **(ख)** बापू ने स्वयं को सीमेंट कहा था। **(ग)** सुकरात ग्रीस का एक महान संत था। **(घ)** इस कहानी से शिक्षा मिलती है कि व्यक्ति को व्यवहार कुशल होना चाहिए।
3. **(क)** अगर कोई हमारी निंदा करता है तो हमें उन अवगुणों को दूर कर देना चाहिए। **(ख)** अब्राहम लिंकन ने अपनी सफलता का रहस्य यह बताया कि ''मैं दूसरों की अनावश्यक नुक्ताचीनी कर उनका दिल नहीं दुखाता।'' **(ग)** सुकरात ने कहा था कि जो मनुष्य मूर्ख है और जानता है कि वह मूर्ख है, वह ज्ञानी है, पर जो मूर्ख है और नहीं जानता कि वह मूर्ख है, वह सबसे बड़ा मूर्ख है। **(घ)** उन्हें गाएँ पालने का शौक था इसलिए, गाएँ और उनके नन्हें बछड़े उनके मकान के पास एक छप्पर में चले गए, पर एक बछड़ा बाहर रह गया। इमर्सन और उनका लड़का दोनों मिलकर उस बछड़े को पकड़कर खींचने लगे, जिससे वह छप्पर में चला जाए। लेकिन वे ऐसा नहीं कर सके। उन्हें देखकर उनकी बूढ़ी नौकरानी दौड़ी हुई आई और अपना अँगूठा बछड़े के मुँह में प्यार से डालकर उसे झोंपड़ी की तरफ़ लेकर चल दी और वह चुपचाप छप्पर के अंदर चला गया। नौकरानी अनपढ़ थी, किताबें और कविता लिखना नहीं जानती थी, पर व्यवहार कुशल थी। प्रेम की भाषा जानवर तक जानते हैं, तो मनुष्य क्यों नहीं समझेगा। अत: सभी के साथ प्रेमपूर्ण व्यवहार करना चाहिए। **(ङ)** लेखक ने दुनिया को काँच के महल जैसी बताया है। अपने स्वभाव की छाया ही उस पर पड़ती है। आप भले तो जग भला, आप बुरे तो जग बुरा। आपको दूसरों के दोषों को न देखकर उनमें जो गुण हैं, उन्हें ग्रहण करना चाहिए फिर सभी आप से प्रेम करेंगे, और यदि आप दूसरों के अवगुणों को ही देखेंगे तो वे आप से शत्रुवत व्यवहार करेंगे क्योंकि आप भी उनके साथ शत्रुवत व्यवहार करते हैं।
4. लोग दूसरों की छोटी-छोटी गलतियों पर तो ध्यान देते हैं लेकिन अपनी बड़ी से बड़ी गलतियों को भी नजरअंदाज कर देते हैं।

भाषा और व्याकरण

1. स्वयं कीजिए।
2. स्वयं कीजिए।

3. **(क)** अत्यधिक क्रोधित होना—नीमिष को रात को देर से आता देखकर उसके पिताजी आग-बबूला हो गए। **(ख)** घमंड हो जाना—निशा की लाटरी क्या लगी उसका तो दिमाग ही चढ़ गया। **(ग)** घबरा जाना — हथियारबन्द चोरों को देखकर सेठ जी के हाथ-पैर फूल गए। **(घ)** बहुत प्यारा — राजेश अपने माता-पिता की आँखों का तारा है। **(ङ)** एकमात्र सहारा — श्रवण कुमार अपने माता-पिता के लिए अन्धे की लकड़ी था।

अध्याय-13. सूरदास के पद

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (क) 2. (ग) 3. (घ) 4. (ख)

लिखित प्रश्न

1. **(क)** मधुबन **(ख)** मन **(ग)** कर **(घ)** प्रातः **(ङ)** पग
2. **(क)** श्रीकृष्ण मक्खन खाने से मना कर रहे हैं। **(ख)** श्रीकृष्ण के अनुसार उनके पीछे ग्वाल-बाल पड़े हैं। **(ग)** श्रीकृष्ण गाय चराकर शाम को घर लौटते थे। **(घ)** श्रीकृष्ण की बातें सुनकर माता यशोदा ने हँसकर उन्हें गले से लगा लिया।
3. **(क)** श्रीकृष्ण गाय चराने इसलिए जाना चाहते थे क्योंकि वे वृंदावन के भिन्न-भिन्न प्रकार के फल अपने हाथों से खाना चाहते थे। **(ख)** जब माता ने कहा कि धूप में घूमने से तुम्हारा चेहरा कुम्हला जाएगा तो श्रीकृष्ण ने कहा कि वे उनकी सौगंध खाकर कह रहे हैं कि उन्हें धूप नहीं लगती। **(ग)** माता के समझाने का श्रीकृष्ण पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा और वे अपनी जिद पर टिके रहे। **(घ)** श्रीकृष्ण चार पहर बंसी के साथ वन में भटकते हैं, क्योंकि वे गायों को चराने के लिए जाते हैं। **(ङ)** प्रातः श्रीकृष्ण गायों को चराने के लिए मधुबन में जाते हैं क्योंकि गायों और ग्वालों के बिना उनका मन नहीं लगता है।

भाषा और व्याकरण

1. स्वयं कीजिए।
2. **(क)** नहीं **(ख)** मक्खन **(ग)** गाय **(घ)** पीछे **(ङ)** मेरी **(च)** पर **(छ)** बाँहें **(ज)** किस **(झ)** भोली

अध्याय-14. यक्ष और युधिष्ठिर

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (ख) 2. (घ) 3. (ग) 4. (क)

लिखित प्रश्न

1. **(क)** पांडव **(ख)** प्यास **(ग)** गति **(घ)** दुर्बल **(ङ)** पृथ्वी
2. **(क)** युधिष्ठिर के अनुसार हवा से तेज़ मन चलता है। **(ख)** युधिष्ठिर ने सबसे बड़ा बरतन पृथ्वी को बताया। **(ग)** युधिष्ठिर की दृष्टि में हिमालय से भी ऊँचा पिता है। **(घ)** खतरे में मनुष्य को साहस बचाता है।

3. **(क)** युधिष्ठिर और उनके भाइयों को जुए की शर्त के अनुसार बारह वर्ष का वनवास और एक वर्ष का अज्ञातवास काटना था। इसलिए वे वनवास के दिनों में जंगल में भटक रहे थे। **(ख)** जब युधिष्ठिर के चारों भाई लौटकर नहीं आए तो वे स्वयं उनकी तलाश में निकल पड़े। **(ग)** युधिष्ठिर ने बताया कि इस संसार में प्रतिदिन असंख्य प्राणी मौत के मुँह में जा रहे हैं। यह देखकर भी लोग सदैव जीवित रहने की इच्छा करते हैं। यही संसार का सबसे बड़ा आश्चर्य है। **(घ)** युधिष्ठिर के पिता की दो पत्नियाँ थी कुंती और माद्री। कुंती का पुत्र युधिष्ठिर जीवित था और माद्री के भी एक पुत्र को जीवित रहने के लिए युधिष्ठिर नकुल को पुनर्जीवित करना चाहते थे। **(ङ)** पानी लेने गए सहदेव को पास में ही एक जलाशय मिल गया ; जैसे ही उसमें पानी-पीने लगा तो वह अचेत हो गया।

भाषा और व्याकरण

1. **(क)** दुः + साहस — विसर्ग संधि **(ख)** अचेत् + अवस्था — दीर्घ संधि **(ग)** हिम + आलय — दीर्घ संधि **(घ)** दुः + बल — विसर्ग संधि **(ङ)** सर्व + अधिक — दीर्घ संधि **(च)** पुनः + जीवित — विसर्ग संधि।
2. **(क)** बेहाल — जो व्याकुल हो **(ख)** बेचैन — जिसे चैन न हो **(ग)** बेहिसाब — जिसका कोई हिसाब न हो **(घ)** बेपरवाह — जिसे किसी की परवाह न हो **(ङ)** बेईमान — जो ईमानदार न हो।

अध्याय-15. सामूहिक प्रयास

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (ख) 2. (ख) 3. (क) 4. (ख)

लिखित प्रश्न

1. **(क)** कड़कने **(ख)** चमकीला **(ग)** गाँव **(घ)** पत्थर **(ङ)** संन्यासी
2. **(क)** छकड़े के अंदर बैठा हुआ आदमी अपनी धुन में कोई पहाड़ी लोकगीत गा रहा था। **(ख)** दुकानदार ज़मीन पर बैठकर फूल-पत्तियाँ बना रहा था। **(ग)** बाद वाले दो छकड़ों में कंबल और मिट्टी के बरतन लदे हुए थे। **(घ)** संन्यासी ने उनको समझाया कि—''चमत्कार तो हुआ है, लेकिन यह चमत्कार आपकी सम्मिलित शक्ति का है। अगर आप मिलकर ज़ोर न लगाते, तो पत्थर को हटाया नहीं जा सकता था।''
3. **(क)** दुकानदार को अपना छकड़ा इसलिए रोकना पड़ा क्योंकि सड़क के बीच में एक बड़ा पत्थर पड़ा हुआ था जिसने पूरा रास्ता रोक रखा था। **(ख)** बाईं ओर नदी पूरे वेग से बह रही थी और दाईं ओर ऊँची चट्टान अपना सीना ताने खड़ी थी। इसीलिए छकड़े वाले ने सड़क के बीच में पड़े हुए पत्थर से बचकर निकलने की कोशिश नहीं की। **(ग)** आस-पास के गाँवों के लोग संन्यासी को पहचानते थे, इसीलिए सभी ने उन्हें श्रद्धापूर्वक प्रणाम किया। **(घ)** संन्यासी की बात सुनकर उन लोगों को एक नया ज्ञान मिला कि कोई भी बड़ा काम करने के लिए आपसी सहयोग की आवश्यकता होती है।

बड़े और महान कार्य सामूहिक प्रयास से ही संभव होते हैं। **(ङ)** लकड़ी के छकडे वाला दुकानदार के पास आकर बैठ गया। उसने पत्थर को हटाने का प्रयास नहीं किया। दोनों किसी तीसरे के आने की प्रतीक्षा करने लगे।

भाषा और व्याकरण

1. स्वयं कीजिए।
2. **(क)** मिठास **(ख)** खटास **(ग)** बुढ़ापा **(घ)** अपनत्व **(ङ)** मानवता **(च)** चढ़ाई **(छ)** ऊँचाई **(ज)** बचपन
3. **(क)** रात बड़ी भयावह थी। **(ख)** नाले लबालब भर गए **(ग)** रास्ते के बीचों-बीच एक पत्थर पड़ा हुआ था। **(घ)** उसने पत्थर के चारों ओर चहलकदमी की। **(ङ)** उन्होंने उसे संन्यासी का चमत्कार माना।

अध्याय-16. मैंने तैरना सीखा

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (घ) 2. (ख) 3. (घ) 4. (ग)

लिखित प्रश्न

1. **(क)** संगीत **(ख)** मस्तिष्क **(ग)** जल **(घ)** रासलीला **(ङ)** भावी
2. **(क)** इस निबंध में लेखक ने मूर्तिकला, चित्रकला, काव्यकला आदि कलाओं के नाम गिनाए हैं। **(ख)** इस निबंध में विदेशी नदियों टेम्स, मिसीसिपी तथा राइन के नाम आए हैं। **(ग)** जब लेखक पानी से बाहर आया, तो उसके आँख, कान, मुँह तथा सारे शरीर से पानी टपक रहा था, मानो स्पंज की मूर्ति किसी ने खड़ी कर दी है और उसे कोई दबा रहा है। **(घ)** लेखक के गुरु जी ने लेखक को घाट की ओर धक्का दिया।
2. **(क)** लेखक की दृष्टि में गंगा-यमुना के किनारे रहने वाला यदि तैरना न जानता हो, तो वह वैसा ही है, जैसे टेम्स के किनारे का रहने वाला बाल डांस न जानता हो, मिसीसिपी के तट का वासी रॉक-एन-रॉल न जानता हो और राइन का पानी पीने वाला व्याकरण न जानता हो। **(ख)** लेखक के अनुसार, वाराणसी में गंगा का वही महत्व है जो सरकारी कागजों में साइन का, विवाह में नाइन का तथा रेलवे में लाइन का है। **(ग)** जब गुरुजी तैरने के लाभों पर भाषण दे रहे थे तब दो अवसरों पर लेखक को लगा कि भाषण की बीमारी व्यापक है। **(घ)** जब लेखक तैरना सीखने के लिए पानी में उतर रहा था तो लोग उसकी ओर ऐसे देख रहे थे मानो मनुष्य नहीं, कोई चिड़ियाघर का निवासी तैरने जा रहा हो।
3. **(क)** तैरना सीखने से पहले आपको ऐसी जगहों पर जाना चाहिए जहाँ जलाशय हो तथा पानी में तैरना सीखा जा सके तथा जान की बाजी लगानी होगी। **(ख)** वाराणसी के बारे में प्रसिद्ध है कि वहाँ कम कपड़े पहनने वाला महाजन होता है तथा जो कपड़े नहीं पहनता वह देवता समझा जाता है। **(ग)** गुरुजी के लिए तैरना बहुत आसान था। जिस प्रकार मच्छर आसानी से मसहरी में घुस जाता है ठीक उसी प्रकार गुरुजी भी तैरने के लिए पानी में घुस जाते थे।

भाषा और व्याकरण

1. **(क)** सप्रेम — प्रेम के साथ **(ख)** सरस — रस के साथ **(ग)** सपरिवार — परिवार के साथ **(घ)** सधन्यवाद — धन्यवाद के साथ **(ङ)** सकुशल — कुशलता के साथ।
2. **(क)** दयालु **(ख)** साहसिक **(ग)** भयानक **(घ)** पथरीला **(ङ)** जलीय **(च)** उत्सुकतापूर्वक **(छ)** पश्चिमी **(ज)** स्वर्गीय **(झ)** चिंतनीय
3. स्वयं कीजिए।
4. **(क)** अनेक **(ख)** आवश्यक **(ग)** जीवन **(घ)** निश्चय **(ङ)** विदेश **(च)** लाभ **(छ)** सांय **(ज)** युवती **(झ)** बालिका

अध्याय-17. बहुत दिनों से सोच रहा था

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. **(क)** 2. **(ग)** 3. **(ख)** 4. **(क)**

लिखित प्रश्न

1. **(क)** पाई **(ख)** फल **(ग)** लगाऊँ **(घ)** अंग **(ङ)** अपना
2. **(क)** कवि बहुत दिनों से सोच रहा था कि यदि उसे कहीं से थोड़ी-सी ज़मीन मिल जाए तो वह उस पर बाग या बगीचा लगा ले। **(ख)** आजकल फूल नेताओं के गले में मिलते हैं। **(ग)** कवि को एक इंच भी धरती नहीं मिल पाई। **(घ)** आधुनिक सभ्यता हमें फेफड़ों का जहर बाँट रही है।
3. **(क)** 'चिड़िया सब डरती हैं मुझसे' कवि ने ऐसा इसलिए कहा है क्योंकि वह एक मनुष्य है और मनुष्य ही पेड़ों को अपने स्वार्थ के लिए काट रहा है जिनसे उनके घोंसले भी उजड़ गए हैं। **(ख)** कवि ने बच्चों के पास धरती, फूल-फलों से लदे बगीचे, क्यारी, खेती, चौपाए, पक्षी आदि होने की संभावना व्यक्त की है। **(ग)** कवि बच्चों से विनती कर रहा है कि वे अपनी दुनिया को कभी भी न खोएँ अर्थात् नष्ट न करें। **(घ)** इस कविता का संदेश है कि हमें अपने स्वार्थ के लिए पेड़-पौधों को नहीं काटना चाहिए। **(ङ)** कविता में कवि ने विनती की है कि जहाँ चौपाए घूम रहे हैं, और सहन में पक्षी झूम रहे हों, तो उस दुनिया को मत खोना, पेड़ों को मत कटने देना क्योंकि आज की मानव सभ्यता पेड़ों को काट रही है। अधिक से अधिक पेड़ लगाएँ।

भाषा और व्याकरण

1. **(क)** चिड़ियाँ **(ख)** गुड़ियाँ **(ग)** बुढ़ियाँ **(घ)** पुड़ियाँ **(ङ)** डलियाँ **(च)** बिटियाँ
2. धरती - भू, भूमि, धरा; बाग - उपवन, वाटिका, फुलवारी; फूल - पुष्प, सुमन, कुसुम; हवा - वायु, पवन, समीर; जलाशय - तालाब, ताल, तड़ाग।
3. **(क)** अग्रणी **(ख)** अग्रज **(ग)** अधर्म **(घ)** अनुत्तीर्ण **(ङ)** अनियमित **(च)** अज्ञात **(छ)** अनियंत्रित
4. स्वयं कीजिए।

अध्याय-18. स्त्री की पीड़ा

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (क) 2. (ग) 3. (क) 4. (क)

लिखित प्रश्न

1. (क) मौका **(ख)** गाँव **(ग)** साफ़ **(घ)** घुटन **(ङ)** ढीली

2. (क) पत्र लेखिका का विवाह बारह वर्ष की उम्र में हुआ था। **(ख)** पत्र लेखिका छिप-छिपकर कविताएँ लिखती थी। **(ग)** लेखिका ने अपने भाई शरत को इसलिए बुलाया था ताकि वह बिंदू को अपने साथ तीर्थ यात्रा पर ले जाए। **(घ)** लेखिका तीर्थ यात्रा करने जगन्नाथपुरी गई थी।

3. (क) बिंदू के आने पर घर के लोग इसलिए परेशान हो गए क्योंकि वह लेखिका की जेठानी की बहन थी जो उसके पीहर से आई थी। वह न तो रूपवती थी और न ही धनवती और अब उसका सारा बोझ उन पर पड़ गया था। **(ख)** बिंदू अपनी माँ के गुजरने पर लेखिका के घर आ गई थी। **(ग)** पत्र लेखिका के जगन्नाथपुरी जाने की बात सुनकर घर के लोग इसीलिए खुश हुए क्योंकि लेखिका अपनी जेठानी की बहन बिंदू के प्रति होने वाले अत्याचार का विरोध कर रही थी। **(घ)** अंत में लेखिका ने जगन्नाथपुरी में ही रहने का निश्चय किया।

भाषा और व्याकरण

1. (क) रूपवान, रूपवती **(ख)** धनवान, धनवती **(ग)** बलवान, बलवती **(घ)** धैर्यवान, धैर्यवती **(ङ)** गुणवान, गुणवती **(च)** दयावान, दयावती

2. (क) हमारे ब्याह को आज पंद्रह साल हो गए। **(ख)** तुम्हारे घर की मँझली बहू तीर्थ करने जगन्नाथपुरी आई थी। **(ग)** तुम सबको पहुँचने में कितनी मुश्किल हुई। **(घ)** फिर रोज-मर्रा के काम में जुट गई। **(ङ)** बिंदू के ब्याह को तीन दिन हुए।

3. (क) अत्यधिक क्रोध आना - आयशा को सामने देखकर शिशिर के तन-बदन में आग लग गई। **(ख)** बिल्कुल पसंद न आना - रिया का बदतमीज भाई किसी को भी फूटी आँख न सुहाता था। **(ग)** जलना - विजय को पुरस्कार प्राप्त होता देखकर सुजल के सीने पर साँप लोट गए।

4. (क) व्याह - शादी, विवाह, परिणय, बंधन **(ख)** घर - आवास, गृह, निवास **(ग)** औरत - महिला, नारी, वनिता **(घ)** पास - समीप, निकट, नजदीक **(ङ)** खुद - स्वयं, अपने आप, स्वत: